Vol 3 Issue 5 Nov 2013

Impact Factor : 1.9508 (UIF)

ISSN No :2231-5063

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 1.9508 (UIF)

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Golden Research Thoughts
Volume-3, Issue-5, Nov-2013
ISSN 2231-5063

Available online at www.aygrt.isrj.net

अप्रासंगिक होते मूल्यों के बीच निर्माण और परिवर्तन की प्रक्रिया

अनुज कुमार तरुण
तदर्थ सहायक प्रवक्ता हिन्दी विभाग शिवाजी कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय

सारांश: असगर वजाहत के उपन्यास 'सात आसमान' एक व्यवस्था के विघटन व दूसरी व्यवस्था के आगमन की द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया से संबंधित है। जो मूल आस्थाएँ मध्ययुग में प्रासंगिक थीं, नए मूल्यों को धरण न कर पाने के कारण छीजने लगती है। पुराने मूल्यों के स्थान पर नए मूल्य बार–बार दस्तक देते, प्रतीत होते हैंऋ आस्था का स्थान ताख्रककता ले लेती है। व्यक्ति जब इन नए मूल्यों के अनुसार अपने को नहीं ढाल पाता है, तो स्वयं भी अप्रासंगिक होता जाता है। परिवर्तन के अभाव में निरंतरता रूढ़ि बन जाती है। और निरंतरता के अभाव में परिवर्तन आधरहीन बन जाता है। कोई भी व्यवस्था निरंतरपूर्वक कायम रहे, नये परिवर्तन को स्वीकार न करे तो वह अपनी सृजनात्मकता खो देती है। 'सात आसमान' में लेखक एक पात्रा के रूप में हैं जो चार सौ वर्षों के कालक्रम में पैफले हुए अपने खानदान की कथा कह रहा है। जिस वृक्ष की जड़ें चार सौ वर्षों तक पैफली हुई हैं, उस वृक्ष के पफलने–पूफलने, सूखने और तत्पश्चात् धराशायी हो जाने की गाथा है, यह उपन्यास। इस कृति के शीर्षक में इस्लाम के मिथक 'अन्त में दुनियां पफानी है।' और सात आसमानों के उफपर बैठा मालिक ही सत्य है, को संकेतित करने का लाक्षणिक रूप है। शीर्षक के प्रति लेखक का नजरिया हमें सूपफी कवि जायसी की याद दिलाता हैऋ जिन्होंने पद्मावत में लिखा है – फ्छार उठाई लीन्ह एक मूठी नाहि त काह है पृथ्वी झूठीय् यहाँ दुनिया के प्रति इस नजरिये को रखता है कि वास्तविक संसार तो माया है। सत्य तो इस संसार के परे है। शंकराचार्य ने दर्शन के क्षेत्रा में यही कहा था – ब्रह्म सत्य जगत् मिथ्या। उपन्यास के अन्त में अब्बा मियाँ, अम्मी, अब्बा आदि की मौत इस संसार की नश्वरता को ही दर्शाता है।

प्रस्तावना:

19वीं शताब्दी के अंतिम दौर की किस्सागोई से जो अनेक पीढ़ियों का चरित्रा रचा गया था, वह अन्त में अपने में बदलाव न कर पाने के कारण गिर पड़ता है। वर्तमान पीढ़ी का वारिस अपनी विरासत को निर्ममतापूर्वक अस्वीकार कर देता है। उपन्यास में अब्बा की खामोश मौत नए मूल्यों को स्वीकार न कर पाने के कारण अप्रासंगिक हो जाने की व्यथा कथा है।

इस कृति में लेखक ने अपनी अतीत की गौरवगाथा का वर्णन किया है। अतीत के मूल्यों के छीजते जाने से जिस यातना का अनुभव लेखक करता है, उस भूमि पर खड़े होकर उसने गाथा कही है। गौरवगान तो छलावा है, वास्तविकता उस टूटन की टीस है। भले ही लेखक ने पुराने मूल्यों की अप्रासंगिकता को समझते हुए नए मूल्य स्वीकार कर लिये हों, परन्तु विकास के क्रम में लेखक इतनी आसानी से उन सब से उबर नहीं पाता है। लेखक जिस चरित्रा के गौरवपूर्ण अतीत को दिखाता है उसी के दयनीय वर्तमान को दिखा निर्ममतापूर्वक अपने कर्तव्य का निर्वाह करता है। डॉ विश्वनाथ त्रिपाठी लिखते हैं – प.... कृति का शेषपफल है पूर्वजों की कांवर पेफंक देने के अपराध बोध की यातना जो वर्तमानता यानि विकास की अनिवार्यता थी। विकास की इस यातना भूमि से असगर वजाहत ने अपने पूर्वजों की कथा कही है।

यह उपन्यास उन कारणों की पड़ताल करने का प्रयास है जिसके कारण सामंती वैभवपूर्ण समाज धीरे–धीरे पतनशीलता की ओर उन्मुख होता गया। भोग विलास में पूरी तरह डूबे हुए ये चरित्रा श्रम को हेय दृष्टि से देखते हैं। विरासत में प्राप्त जायदाद को उलूल–जुलूल तरीकों से खर्च करने के कारण एक जमाने के नवाबों पर भुखमरी तक की नौबत आ जाती है। अब्बा और खालू जैसे लोग भी इस विरासत को खत्म होने से नहीं बचा पाते और आखिरकार एक दिन ये पुराने खंडहर की तरह झरझरा कर गिर जाता है। श्री विजय बहादुर सिंह लिखते हैं – एक गौरवशाली इतिहास चिन्दी होकर बिखर गया। उपन्यास इस बिखराव की कहानी को बड़ी संजीदगी से बयान करता है। इससे गुजरते हुए बार–बार प्रसाद की कमायनी की चिन्ता सर्ग की ये पंक्तियां याद आती हैं – वे सब डूबे, डूबा उनका विभव, बन गया पारावार उमड़ रहा है देव–सुखों पर दुःख जलधि का नाद अपार।

इस उपन्यास के आरंभ में एक कुएँ का वर्णन है। यह कुआँ चमत्कारिक बना दिया गया है। केवल एक दिन के लिए आए अब्बू साहब आजकल–आजकल करते अपनी पूरी जिन्दगी इसी कुएँ के किनारे गुजार देते हैं, जिस किसी ने इस कुएँ का पानी पिया वह इसी का होकर रह जाता है। लेकिन आज उसकी स्थिति ऐसी क्यों हो गई कि अपने अब्बा के लाख बुलाने पर भी लेखक व उसके छोटे भाई दोनों में से कोई भी वहाँ लौटना नहीं चाहते हैं। उपन्यासकार ने उपन्यास के आरंभ में लिखा है – फ्सीधी–साधी सुस्त रफ़्तार सैंकड़ों सालों के थपेड़ों को सहती हजारों तब्दीलियों को हजम करती अपनी ही तरंग में बहती वह जिन्दगी किसी भी साँचे में ढ़लने से इनकार कर देती है। वह उस कुएँ की तरह है जिसका पानी जिसने भी पी लिया, वहीं का हो गया। यह कुआँ सटीक प्रतीक है, आत्म–पुष्ट सामंती वातावरण का सामंती जीवन सीधे–साधे ढंग से धीरे–धीरे चल रहा था। कोई भी परिवर्तन चाहे व्यवस्था में या पिफर मूल्यों में अचानक नहीं होता वह एक ऐतिहासिक प्रक्रिया में ही होता है। जब सीधी–साधी सुस्त रफ्रतार जिन्दगी हजारों तब्दीलियों को हजम करती, अपने साँचे में किसी भी तरह के परिवर्तन से इनकार करती है तो पिफर बदलाव पूरी तरह होता है, व्यवस्था पुराना केंचुल छोड़कर नया केंचुल धरण करती है। उपन्यास के अन्त तक आते–आते जब सामंती दुनिया टूट जाती है, वंश बिखर जाता है। इस कुएँ के पानी का जादुई असर खत्म हो जाता है। अब इस कुएँ के पास रहने वाले लोग भी दूर चले जाते हैं। पूरी रचना कुएँ के पानी के जादू के खत्म हो जाने यानि एक समाज व्यवस्था के उपरांत दूसरी व्यवस्था के आगमन की कहानी है। इस व्यवस्था के भीतर हमें विचित्रा प्रकार के चरित्रा दिखाई देने लगते हैं। इसका उदाहरण हम असगर वजाहत की इस कृति में देख सकते हैं। जो अपने आप में विशिष्ट है।

'सात आसमान' के पूर्वा(में जो पूर्वजों के विलासी, जिद्दी, प्रतापी, चतुराई से कार्य करने वाले मूल्य केन्द्रित जीवन जीने वालों का जो विशाल ढाँचा आरंभ में खड़ा किया गया था वह क्रमशः कमजोर होते–होते अंत में पूर्णतः गिर पड़ता है। लेखक ने मौतमुद्दौला जैसे चरित्रा का वर्णन किया है जो कि किस्से–कहानियों के पात्रा जैसे लगते हैं। मौतमुद्दौला लेखक की माँ की पीढ़ी में है परन्तु उनकी सभी प्रकार की स्वार्थपरता और षड्यंत्रा को लेखक ने बेलाग होकर प्रस्तुत किया है।

डॉ सत्यप्रकाश मिश्र लिखते हैं – फ्कब्रगाह में लावारिस पड़े मौतमुद्दौला का मकबरा उसके वैभव, शक्ति, आतंक, क्रूरता और चालाकी के करतबों के परिप्रेक्ष्य में नश्वरता को ही दोहराता है। यह कृति बादशाह, बेगम, रेजीडेन्ट, मौतमुद्दौला के माध्यम से अवध के नवाबी के अध्पतन का ही इतिहास नहीं बताता बल्कि सत्ता–संघर्षों में मूल्यों व रिश्तों का क्या स्थान है इसे भी कुछ दूर तक स्पष्ट करता है और यहीं अतीत से वर्तमान जुड़ता है। वर्तमान भारतीय राजनीति का अर्थ ही है मूल्यों से समझौता करते–करते मूल्यहीनता तक पहुँच जाना, जहाँ कोई आदर्श, उद्देश्य और स्वप्न न हो। राजनीति को प्रत्येक व्यक्ति मौतमुद्दौला की ही तरह सत्ता प्राप्ति का साध्न मानता है। उपन्यासकार 'सात आसमान' उपन्यास में किवदंतियों को मौखिक वृतांत और इतिहास को अपनी अनुभूतियों, संवेदनाओं और कल्पनाओं में इस तरह घुलामिला कर प्रस्तुत करते हैं कि वह इतिहास की सीमाओं का विस्तार ही नहीं, वर्तमान व अतीत के बीच तारतम्यता का अनुभव कराता है। वर्तमान में इतिहास को तरोताजा करने का लेखक का ढंग उल्लेखनीय है, फ्कतबे पर कदर धूल थी कि यह न पढ़ा जा सकता

था कि वह किसकी कब्र है, मैंने कतबा पढ़ने की कोशिश की तो रिक्शे वाला मेरी दिक्कत समझ गया। उसने कतबे पर से मिट्टी हटाना शुरू कर दी। जैसे–जैसे वह मिट्टी हटा रहा था मैं कतबे को पढ़ता आ रहा था। .....उसके बाद रिक्शेवाले ने और मिट्टी हटाई तो असली नाम नजर आया और मैं दरहकीकत कुछ लड़खड़ा सा गया – नाम था मौतमुद्दौला! तो ये मौतमुद्दौला की कब्र है। बिल्कुल इसे यही होना चाहिए था। मौतमुद्दौला की याद आयी और उसके साथ मिर्जा असदुल्लाह खां गालिब की याद आ गई – गालिब, जिन्होंने मौतमुद्दौला की शान में कसीदा लिखा था। लेकिन शर्तें मौतमुद्दौला ने नहीं मानी थी इसलिए कसीदा गालिब ने उन्हें सुनाया या पेश नहीं किया था।

इस संदर्भ में डॉ विश्वनाथ त्रिपाठी लिखते हैं, फइतिहास बोध एक ओर कर्म बोध है दूसरी ओर काव्य बोध। यानि निर्माण और परिवर्तन की प्रक्रिया से सब कुछ की समाप्ति का बोध। लेखक ने परिवर्तन की प्रक्रिया में क्रमशः एक परिवार की सत्ता के उदय और अस्त की रोचक किन्तु करुण कथा कही है। यह करुण कथा उपन्यास के कई एक चरित्राों के बारे में क्रमशः आती है_ जैसे नाना एक समय में नवाबी से रहते थे अब, अपनी छोटी–छोटी जरूरतों के लिए दूसरों पर निर्भर हैं। उन्हें जबरदस्ती उनका बेटा दूसरों के घर पैसे मांगने के लिए ले जाता है। वहीं बड़े आगा जो एक समय में इतने खर्चीले व घड़ियों के शौकीन थे। पर बाद में अपने जरूरत के लिए नौकरों वाले काम कर देते थे। वह घर के अन्य लोगों की धमकियाँ आराम से सुन लेते थे। महल के लोगों को मौतमुद्दौला के वारिस होने के कारण मिलने वाला वजीपफा घटकर दस रुपये तक हो गया था। काम करने को अपनी गरिमा के विरु(मानते थे इसलिए महल के अपने हिस्से में से कुछ को किराए पर उठाते थे। चूंकि बेगम भी स्वयं घर का काम नहीं कर सकती थी इसलिए नौकरानियों को रखा हुआ था और अपने हिस्से में से कुछ जगह उन्हें रहने के लिए दिया हुआ था। पहले बाहर के पुरुषों का महल में आना वखजत था। अब नौकरानियों के पति व उनके दोस्त बेरोकटोक आते हैं। सपेफद महल का सेंट्रल डबल रूम चमड़े के कारखाने में तब्दील हो गया और अब महल में चमड़े की गंध तैरती रहती थी। एक समय लखनउफ के नपफास को मिलाए रखने वाले लोग अब चमड़े के गंध के बीच रह रहे थे। सपेफद महल के अधिकांश चरित्रा जहाँ पतन की ओर उन्मुख दिखते हैं, वहीं खालू की स्थिति इन लोगों से भिन्न है। उनकी नजरों में श्रम करना गरिमापूर्ण है। उनकी दुनिया सपेफद महल तक सिमटी न होकर बाहर तक पैफली हुई है, वो क्लब जाते हैं, दस अन्य लोगों से बात करते हैं। दुनियादारी की समझ है उन्हें। वहीं महल के अन्य लोग बिना कुछ किए केवल महल तक सिमटे हुए हैं। डॉ दुर्गा प्रसाद कहते हैं, फसात आसमान सामंती परिवारों के बनने और बिगड़ने उनके आपसी तनाव और झगड़े, उनकी जिन्दगी की आंतरिक एवं नाहक पहलुओं, सत्ता शक्ति और शारीरिक भूख का एक महावृतांत है। महावृतांत अक्सर बड़ा और उबाउफ हुआ करता है और पात्राों की भरमार होता है। परन्तु ‘सात आसमान’ जीवंत पात्राों की जीवंत गाथा है। प्रत्येक पात्रा की अपनी विशेषताएँ और समस्याएँ हैं। एक भरपूर जिंदगी की झांकी इस उपन्यास में देखने को मिलती है।

लेखक ने इतिहास की मौखिक परंपरा का प्रयोग अपने उपन्यास लेखन में किया है। प्रमाणिकता बनाए रखने के लिए कहीं–कहीं लिखित इतिहास से भी उपन्यास के प्रसंगों को हम जोड़ सकते हैं। जैसे मौतमुद्दौला का जिक्र कहीं–कहीं इतिहास में मिल जाता है। लेखक के मौखिक इतिहास के प्रयोग द्वारा निम्नवर्गीय पात्रों को केन्द्र में न रखकर उच्चवर्गीय पात्रों को केन्द्र में स्थान दिया है। ये नवाबों व जमींदारों के परिवार की कहानी है। एक जानी पहचानी व्यवस्था ईस्ट इण्डिया कम्पनी के आगमन और सत्ता हस्तक्षेप के अन्दरूनी किस्सों की याद दिलाता है जिसके कारण यह देश पराधीन हुआ और यहाँ के राजे–रजवाड़े अपनी सत्ता खो बैठे।

लेखक ने उपन्यास में जितने भी चरित्रा लिए हैं, उनके साथ इतने तथ्य जुड़े हैं कि सभी का चरित्रा भरा–पुरा लगता है। अब्बा मियाँ की आजादी से पूर्व लंबी–चौड़ी जमींदारी थी और सामंती प्रवृत्तियाँ उनमें पूरी तरह मौजूद है। नौकरी करने को अच्छा नहीं मानते हैं। कारखाना लगा बार–बार उसमें घाटा उठाते हैं, पर नौकरी न तो स्वयं करते हैं और न परिवार के किसी अन्य सदस्य को करने देना चाहते हैं। अब्बा मियाँ राजनीति से इसलिए खपफा हैं क्योंकि आजादी मिलने के साथ ही जमींदारी खत्म हो गई। अब्बा मियाँ उसूल के पक्के हैं, जमींदारी खत्म होने के बाद कभी भी गाँव नहीं गए। किसी भी काम को पूरी तफ्रशील से करते हैं। अब्बा मियाँ संबंधें को पूरा महत्व देते हैं और उसे निभाते भी हैं। अपने भाई की रखैल से हुई बेटी जुबैदा को पूरा सहारा देते हैं और उसकी मौत के बाद उसके पति यासीन को भी पूरी जिन्दगी खिलाते हैं। नौकरों के आराम में भी खलल नहीं डालते, उनके साथ अब्बा मियाँ के पारिवारिक संबंध हैं। परन्तु समय के साथ न चल पाने के कारण युगधरा से बाहर हो जाते हैं। उनके होते हुए लक्खू द्वारा पेड़ कटवा डालने के कारण असहाय होने के अहसास के साथ मर जाते हैं।

ईमान के पक्के मीर तकी को भी हम अब्बा मियाँ के निकट रख सकते हैं। ये ईमान के पक्के व्यक्ति हैं। हालात बदल जाने की वजह से अपने हीरे–जवाहारातों के साथ अब्बा मियाँ की शारण में आते हैं। उनके हीरों की पोटली एक दिन रास्ते में खो जाती है, जिसे वो रोज ढूँढ़ने जाते हैं। ये हीरे शायद प्रतीक हैं उन मूल्यों का जो धीरे–धीरे गायब होते जा रहे हैं। पिफर भी व्यक्ति उसका मोह नहीं छोड़ पाता है और लगातार उन्हें ढूँढ़ने का प्रयास करता है। जो व्यक्ति उस खोने को स्वीकार कर लेता है, वही अपने को परिवखतत मूल्यों के साँचे में ढाल पाने में सपफल हो पाता है।

लेखक के अब्बा विघटित होते हुए मूल्यों और आने वाले मूल्यों के मध्य में स्थित है इसलिए इस टूटन की पीड़ा भी सबसे अधिक वही झेलते हैं। अब्बा यह मानते हैं कि वर्तमान युग में नौकरी का ही भरोसा है। यह आधुनिक युग का स्वीकार है परन्तु पैतृक घर में गधे न लोटें इसका भरोसा चाहते हैं, ये मध्ययुगीन मूल्य हैं। ये भरोसा दोनों बेटों में से कोई भी नहीं दे पाता है। दोनों ही शहर से लौटने के लिए तैयार नहीं है। लेखक कहता है फहमने उन्हें नहीं बताया कि एक बार बड़ा शहर जिसकी आँखों में छुप जाता है वो कितना स्वार्थी हो जाता है। उसकी आँखों में पिफर हर एक चीज की कीमत हो जाती है। वह ऐसे छलावों का निर्माण करता है और उन पर विश्वास करता है जो जीवनभर उसका पीछा नहीं छोड़ते। वह हमेशा आगे की तरपफ देखता व अपार संभावनाओं में जीता है। ये विशेषताएँ आने वाली पीढ़ी की है। बाजारवाद के युग में व्यक्ति हर चीज की कीमत आँककर ही आगे कदम बढ़ाता है। अब्बा की पीढ़ी इन नवोदित मूल्यों को स्वीकार नहीं कर पा रही है और इसलिए अपने को अलग–थलग महसूस करती है।

सात आसमान में पुरुष पात्राों की तरह स्त्री पात्राों की भी भिन्न–भिन्न कोटियों का चित्राण है। जिसमें कुछ सामंती राजनीति की शिकार हैं, तो कुछ पुरुष प्रधन मानसिकता की पुरुष पात्राों की भाँति स्त्राी पात्रा भी लेखक के खानदान और ननिहाल (सपेफद महल) से संबंध रखते हैं। सामंतीमान–मूल्यों के बीच रहने वाली इन स्त्राी पात्रों की स्थिति बहुत ही दुखद और दुर्भाग्यपूर्ण है। इस दुर्दशा की मूल वजह सामंती पुरुषों की वह मानसिकता है, जिसमें स्त्रिायों को उपयोग की वस्तु से ज्यादा कुछ नहीं समझा जाता। इसमें अध्किांश स्त्राी पात्रा इस मानसिकता के शिकार हैं। इनके अलावा स्त्राी पात्रा अपनी मानसिकता और परिस्थिति के बंदी तो हैं, परन्तु उसके पीछे का कारण सामंती सोच ही है। उपन्यास में बादशाह बेगम और जतन मियाँ की पत्नी जैसे स्त्राी पात्रा भी हैं। जो खुद स्त्राी होते हुए स्त्री के शोषक हैं। इन दोनों पात्राों का चरित्रा राजनीति से प्रेरित है जो सत्ता की राजनीति में रिश्तों को अहमियत नहीं देता। बादशाह बेगम – अपने बादशाह के रखैल ‘शुबह दौलत’ को अमानवीय यातना देती है, क्योंकि बादशाह ने बेटे की चाहत में उससे संबंध बनाए थे। शुबह दौलत जब बादशाह को पुत्रा प्रदान करती है, तो बादशाह बेगम घृणावश उसे अमानवीय यातना देती है। वहीं लेखक के अपने खानदान में जतन मियाँ की बेगम – जतन मियाँ की (प्रेमिका) सत्ती अहीरण को दोषी मानते हुए एक पागल व्यक्ति से उसका निकाह पढ़वाना चाहती है।

लेखक की नानी का चरित्रा भी अजीबोगरीब है_ जो इतने रईस खानदान से संबंध रखते हुए भी पहले दर्जे की कंजूस थी। कमरे में बिजली न जलाती, खाना बाहर से ही मंगवाती, नौकर हमेशा छोटा ही रखती क्योंकि उसके, उफपर कम खर्च करना पड़ता था। नानी के बारे में लेखक ने लिखा है – फछोटा सा नौकर, छोटी–मोटी चीजें और पैसा जोड़ना, यही उनकी जिन्दगी थी।**ट** लेखक द्वारा चयनित स्त्राी पात्राों को हम दो वर्ग में बांट कर देख सकते हैं – एक कर्मठ तो दूसरा अकर्मण्य। सपेफद महल की अन्य औरतों का चरित्रा–चित्राण कर्मठ रूप से न आकर अकर्मण्य रूप से ही आया है। महल की बेगमें पुरुषों की तरह ऐशों–आराम की जिन्दगी में विश्वास रखती थीं। आखथक स्थिति खराब होने के बावजूद खुद काम न कर नौकरानी से करवाती थी। इसका परिणाम यह हुआ कि अकर्मण्य पात्रों की आखथक स्थिति और ज्यादा दयनीय हो गयी। वहीं लेखक के अब्बा के परिवार में कुल समन बुआ, मदार की माँ, या पिफर अम्मी सभी कर्मठ रूप में आयी हैं। अम्मी, अब्बा की मित्रा, मार्गदर्शक, सहायक सभी कुछ है। दुनियादारी की समझ अम्मी को अब्बा से ज्यादा है। वही कहती हैं कि खेतीबाड़ी से ज्यादा पैसा नौकरी में है। इसमें विक्टोरिया जैसा चरित्रा भी है जिसके विचारों की तुलना लक्खु मियाँ से करते हुए लेखक ने लिखा है कि विक्टोरिया अपनी आजादी बनाए रखने के लिए शादी नहीं कर रही और लक्खू मियाँ अपनी आशादी बनाए रखने के लिए शादी नहीं कर रहे हैं। यह अंतर मूल्यों का स्त्राी–पुरुष के अनुसार बंटवारे से है। पूरी कृति से ही ये बात उभर कर आयी है कि पुरुष के लिए निकाह आवश्यक है। उसके बाद यह चिंता का विषय नहीं कि उसके अन्य कितनी औरतों से संबंध हैं। यह सामंती मूल्य है। इस तरह के मूल्य लेखक ने अपने धरावाहिक उपन्यास ‘पहर–दोपहर’ में जावेद जाबिल के माध्यम से भी दिखाए हैं, जिसमें जावेद स्वयं अन्य औरतों से नाजायज ताल्लुकात में कुछ अनुचित नहीं देखते और उनके अब्बा ने भी उनकी अम्मी को कहा था फघर के अन्दर की मलका तुम हो और तुम ही रहोगी। गली–कूचों की औरतें गली–कूचों की औरतें हैं, और गली कूचों में ही रहेंगी।यह दृष्टिकोण पतनशील सामंती दृष्टिकोण है, जो इस उपन्यास में भी

देखने को मिलता है, लक्खू मियाँ की अम्मी की अकेली चिंता यह है कि कहीं वो क्रिस्तान न हो जाए, वैसे विक्टोरिया से संबंध रखने में उन्हें कोई आपत्ति नहीं है। इन्हीं लोगों के बीच सत्ती जैसे सशक्त चरित्रा को भी लेखक ने उभारा है। परिवारों में रखैलों की एक परंपरा जैसी प्रतीत होती है। पर इन स्त्रिायों को भी अपनी कोटियाँ हैं। सत्ती जैसी रखैल जो आंतरिकता से किसी को चाहती हैं और अपने किसी भी प्रकार के हित को दरकिनार कर दूसरे की भलाई को देखती हैं। इस औरत में गजब का स्वाभिमान भी देखने को मिलता है। कोई भी काम वह पैसे के लालच में न करके जत्तन मियाँ की मानसिक शांति व मान–सम्मान बनाए रखने के लिए करती है। ये सारे गुण उसकी चारित्रिाक गरिमा को उजागर करते हैं। श्री विजयबहादुर सिंह सत्ती व जत्तन मियाँ के संबंध के विषय में कहते हैं – फआज के बाजारू संबंधें की भीड़ में उन संबंधें के बारे में सोचना भी प्रायः मुश्किल लगता है जैसे वे बीते युग के सपने हों। अगर सत्ती चाहती तो जतन मियाँ से हुए निकाह की बात बता कर जायदाद में हिस्सा ले सकती थी, परन्तु उसने जत्तन मियाँ के अपने घरवालों से संबंध सोहार्द्रपूर्ण बने रहे, इसलिए स्वेच्छा से सब कुछ छोड़ दिया। जबरदस्ती जत्तन मियाँ से तलाकनामे पर दस्तखत करवाया। ये जानते हुए भी कि बुढ़ापे में उसे रोटी–रोटी को मोहताज भी होना पड़ सकता है। यह संबंधें के लिए, आदरभाव, बहुत कम चरित्राों में ही देखने को मिलता है।

समृति(और विलासता के एक छोर से आरंभ होकर अभाव और दरिद्रता के दूसरे छोर तक पैफली यह कहानी जितनी करुण है, उतनी जीवनमुखी भी है। भले ही अब्बा मियाँ, नाना–नानी, अम्मी या बेटों को घर बुलाने की जिद्द ठाने अब्बा की खामोश मौत हो, इन सब की मौत एक इतिहास की मौत है। उस जीवन का खत्म हो जाना नहीं है जो इसके बाद भी अपने बौ(िक पौरुष और आत्मविश्वास के बल पर नयी जमीनों की तरपफ रुख किए नयी उम्मीदों के आकाश रच रहा है।

आत्मविश्वास पूर्ण दृष्टि और नयी जमीनों की तरपफ रुख किए हुए नयी उम्मीदों के आकाश के समानान्तर लेखक ने सहकारी पफार्म या राजनीति के माध्यम से ऐसे, चरित्रा भी उकेरे हैं जिनकी दृष्टि लाभ केन्द्रित है और काइयांपन जिनके व्यक्तित्व में प्रमुख है। इस तरह के पात्राों का चित्राण उपन्यास को अर्थपूर्ण बनाता है। यह मनुष्य के समग्र विकास को नए सिरे से मूल्यांकित करने के प्रति चौकन्ना करता है। लक्खू मियाँ, अंगनु, मुश्ताक अली, मैकु या मुंशी के चरित्राों का विकास समय के ही बदलावों का संकेतक है। सीधे–साधे अब्बा बीड़ी के कारखाने, चक्की और सहकारी कृषि पफार्म के स्वयं लाभ–हानि को न समझ पाने और प्रत्येक व्यक्ति पर विश्वास कर लेने के कारण पैसे कमाने के बजाय गँवाते अधिक हैं। परन्तु अब्बा के व्यक्तित्व में श्रम के प्रति हेय दृष्टि नहीं है। अपितु वे श्रम के महत्व को मानते हैं और आरंभ से ही नौकरी करने को कहते हैं। इस उपन्यास में ऐसे चरित्रा भी हैं जिन्होंने मुँह से निकली जबान के लिए ताउम्र अपने को लुटाया पर किसी को धेखा नहीं दिया। सत्यप्रकाश मिश्र कहते हैं – फइस अर्थ में लक्खू मियाँ, मुंशीजी, मैकु आदि परिवखतत युग के परिणाम ही नहीं उसके चरित्रा के भी प्रमाण हैं। सहकारी पफार्म की सभी योजनाओं का लाभ मुंशी जी ने स्वयं खूब उठाया है। 'युग परिवर्तन' और 'निर्माण युग' का लाभ कैसे मुंशी या मैकु जैसे लोग ही उठा पाते हैं। इसका सशक्त चित्राण लेखक ने अपनी कृति में किया है। उपन्यासकार ने लिखा है – फमुंशीजी से मिलने के बाद अब्बा को लगा कि न सिर्पफ जमीन बढ़ायी जा सकती है बल्कि खेती को अच्छा चलाने के लिए पैसा भी मिल सकता है। वह पैसा न सिर्पफ आसान किस्तों पर मिल सकता है बल्कि उसमें छूट भी होगी। मुंशीजी ने बताया था कि, आपकी जमीन में कोई छिछला–सा तालाबाहो तो तालाब खुदवाने के लिए पाँच हजार का अनुदान मिलता है। हजार–दो हजार में उसे ठीक कराए। पाँच–सात सौ ब्लाक वालों पर ख़र्च हो जायेंगे। बाक़ी पैसा कहीं नहीं गया। उसके बाद उसी तालाब में मछलीपालन के लिए पाँच हजार और अनुदान मिलता है। क्या बुरा है, हजार पाँच सौ, मछली के बच्चे, डलवा दीजिए। ये तो अंधी खेती है ....अंधी। ब्लाकवालों के पास इतनी रकम आ गई है कि उनकी समझ में नहीं आता कि इतने कर्ज लेने वाले कहाँ मिलेंगे?यही अवसर है। इस प्रसंग के द्वारा हम सरकारी योजनाओं पर लेखक का व्यंग्य देख सकते हैं। जमींदारी खत्म करने के लिए सीलिंग कानून आया तो सरकारी पफार्म योजना को अपनी–अपनी जमीन बचाने का जरिया मान लोगों ने पफायदा उठाना चाहा। कहा जाता है कि हमारी कानून–व्यवस्था में किसी भी कानून के भीतर इतने पेंच होते हैं कि उससे बचे रहने के उपाय भी अपने आप पहले ही ढूंढ़ लिए जाते हैं। इस उपन्यास में फमुंशीजी 'यही अवसर है' खूब बोलते थे। और खुद उन्होंने अवसर का पूरा लाभ उठाया था।7 सहकारी पफार्म की जितनी भी योजानाएं हो सकती थीं, सबका उन्हें पता था और जितने कामों के लिए अनुदान मिल सकता था सब उन्होंने लिया था। ब्लाक में उनकी अच्छी जान–पहचान थी। यही लाभ जब अब्बा अपनी जमीन का प्रयोग कर उठाना चाहते हैं तो उन्हें हमेशा घाटा ही होता है। लाभ उठाने के लिए आवश्यक है व्यक्तित्व का दोहरापन जो कि अब्बा में नहीं था। हसनपुर सहकारी खेत पफार्म लिमिटेड का वर्णन भी इसी प्रकार का है। इस दृष्टि से यह अपने समय की व्यवस्था का ही नहीं, चरित्रा का भी उद्घाटन है। इसके द्वारा लेखक ने बहुत ही संश्लिष्ट तरीके से यह दिखाने का प्रयास किया है कि कैसे एक ऐसा वर्ग विकसित हो रहा था जो देश के पफायदे के लिये बनायी गई योजनाओं के द्वारा सरकार और गाँव की भोली–भाली जनता को बेवकूपफ बनाकर अपना उल्लू सीध करता है। इस प्रकार यह विकास के इतिहास के साथ–साथ मूल्यों में आते परिवर्तन और शोषण के नए तरीकों का भी इतिहास प्रस्तुत करता चलता है।

लेखक दिखता है कि सामंती समाज नैतिक उतना नहीं जितना अनैतिक होता है। इसी से वह अपने लेखन में नैतिक चरित्राों को प्रश्रय नहीं देता बल्कि अपनी शक्ति और अपने वर्चस्व को कायम रखने के लिए अंगन, मुश्ताक, मैकू, मनीजर जैसे पतित चरित्राों को ही उभारता है। क्योंकि यह व्यवस्था उन्हीं लोगों को संरक्षण प्रदान करती है जिनके अपने कोई सार्थक मूल्य नहीं होते। ये नैतिकता और मूल्यों के बजाय शक्ति और सत्ता शानो–शौकत, दिखावा, तकल्लुपफ, नजाकत, तहजीब–तरकीब वाली एक ऐसी संस्कृति को चित्रिात करता है, जिसमें श्रम करने वालों को हेय दृष्टि से देखा जाता है। मौतमुद्दौला, गाजीउद्दीन, हैदर मिर्जा हादी, लक्खूमियाँ आदि कृति के ऐसे चरित्रा हैं जिनके लिए अपने लाभ के लिए कुछ भी कर जाना अनैतिक नहीं है। एक तरपफ मौतमुद्दौला जैसे सामंती सत्ता और शक्ति का प्रतिनिध्त्वि करने वाले चरित्रा हैं तो दूसरी ओर अब्बा मियाँ, मीर तकी और अमीन साहब जैसे इमान के पक्के चरित्रा भी हैं।

इस उपन्यास की एक बहुत बड़ी विशेषता लेखक की तटस्थ दृष्टि है। कृति किसी तरह की विचारधरा से प्रतिब(प्रतीत नहीं होती। सभी पात्राों के चरित्रा को कृतिकार ने निर्ममतापूर्वक बिना पक्षध्रता के पूरी जीवंतता के साथ उकेरा है। पिछले चार सौ वर्षों के कालक्रम में पूरा उपन्यास पैफला हुआ है और इन चार सौ वर्षों में जो नष्ट हुआ है और जो नया आ रहा है, उसमें क्या मूल्यवान है क्या नहीं है – शायद इसी प्रश्न से जूझने का प्रयास है यह कृति। लेखक ने अतीत को वर्तमान से जोड़ दिया है। यह लिखने की प्रासंगिकता भी यही है कि जो नष्ट हुआ उसे तो नष्ट होना ही था। पर जो नया बन रहा है, क्या उसे इसी रूप में होना चाहिए।

इस उपन्यास में लेखक ने न तो किसी स्थिति, प्रवृत्ति का विरोध किया है और नहीं किसी का समर्थन। इसमें लेखक ने इंसानी जीवन और समाज की मूल प्रवहमान को देखने व समझने के लिए तटस्थता का रुख अख्तियार किया है।

इस उपन्यास में पुराने मूल्यों के प्रति मोह टूटने की पीड़ा, नये मूल्यों के प्रति आकर्षण है। टूटन और आकर्षण की यह प्रक्रिया ही हमें इस उपन्यास को नये संदर्भों में पढ़ने–समझने के लिए प्रेरित करता है। इस प्रकार उपन्यास का ढांचा अपनी संरचना के भीतर संघर्ष, टूटन, पलायन तथा समाज में आ रहे व्यवस्थागत बदलाव के कारण उभर रहे नये संदर्भों की ओर इंगित करता है। यही इस उपन्यास का महत्त्व है।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium   Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net